

0106

पदमान हेमः

Script: N. Nagari. material: PL



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



12.12

621202 12

11.12

पवमान
कोशम्

॥॥॥

उत्तमस्तु ॥ अथ वे वा कति किं वापि वैरासे सा वा गोपि का कान्त्यां पौगा मिस्त्यां का पं वस्त्यां च दि
ता पपपु पुषे धरुवे मित्रे स स्काता व पुष त ॥ अस्त्यां पुषा प काले पुषल ता व पुष ता
सवे द्वा रते मुरु ते ख ग रे पुष
विना वस्त्यां तत्प क मी गी वि व त
पनि प क मी वः प क मी वः वा वि
पवि त्थ ल्वा प्राणा ना प मी ल क
पिला प्राणा प त्प क व पुष व क पं व ग व्वा सा त त दो म पु व क पं व ग वी प्र वि पा वं मी ॥
प्राणा वापि मी ने दो का ला व नु की त ॥ मि मे र म व्वा वि क मी त न व बाल्य को मी न वे

[illegible]

७
 धं नोति तं रो क न ग सौ त स्म त न त्प क म लो प दि वा स्म प दि वा म्बु त्पु ष्टः प ति त व न
 स्म थु दु ष पा दि स म स्म व रु द्वा व रु वि य पा पा ता म्प नो त त्वा र्ध म्भ स री ने पु ज ते पा व म्भ
 द्वा ति म्भ प म्भ कु र्दं ब स्य री न रू
 प व म्भ त्वा म्भ क न वि ष म्भ प म्भ
 नि ष म्भ म्भ वा प र्ब म्भ व म्भ क ल र
 म्भ वा प र्ब म्भ त्वा म्भ म्भ र्ध म्भ र्ध
 ने तु म्भ प नि स म्भ क न म्भ त्वा
 म्भ क ल र म्भ क प ति म्भ प म्भ व म्भ क नि स म्भ त्वा म्भ क नि स म्भ त्वा म्भ क नि स म्भ त्वा
 क ते म्भ प र्ब म्भ व म्भ क नि स म्भ त्वा म्भ क नि स म्भ त्वा म्भ क नि स म्भ त्वा

उत्तमं च संस्थाप्य तेषु कुंतेषु तत्तत्कर्तुं नैवावाद्यात्ताप्यापस्वप्यर्तमिष्टिमेष्ट
 प्रवासाभिर्वाङ्मैवीक्षतत्मात्मा कुंतेषु। रातवैसातसन्नापिभ्यश्चिह्नः पवद्वाङ्मैवीक्ष
 ता। गणपतीकुंतेभ्यश्चिह्नः पवद्वाङ्मैवीक्ष
 सापवद्वाङ्मैवीक्षतापवद्वाङ्मैवीक्ष
 घातशत्रुतास्येरातवैसात
 नाकारुकादौविशि। तानती
 तन्निष्ठातिस्मात्तैः पः सनस्वती। तानतीनघ्नादेवतत्ताङ्मैवीक्षता
 कारुकेवि। तानतीपवद्वाङ्मैवीक्षता। सन्निधौविस्वतत्तत्तैः पः सनस्वती

स बुद्धपाता वप्रा नक्षत्रपा वप्रा नक्षत्रे अथ येति सप्त नक्षत्रे तानौषधपाता नौषधपाता नौषधपाता
 लोपः पा वप्रा नक्षत्रे अथ येति सप्त नक्षत्रे तानौषधपाता नौषधपाता नौषधपाता
 सुकृति कलरां सप्त नक्षत्रे अथ येति सप्त नक्षत्रे तानौषधपाता नौषधपाता नौषधपाता
 कुतस्थ पा वप्रा नक्षत्रे अथ येति सप्त नक्षत्रे तानौषधपाता नौषधपाता नौषधपाता
 नापं प्रप्रा सप्त कलरां सप्त नक्षत्रे अथ येति सप्त नक्षत्रे तानौषधपाता नौषधपाता नौषधपाता
 पुषते पतिरुषध अथ येति सप्त नक्षत्रे तानौषधपाता नौषधपाता नौषधपाता
 पा वप्रा अथ त्रयपाता नक्षत्रे अथ येति सप्त नक्षत्रे तानौषधपाता नौषधपाता नौषधपाता
 नापं सप्त नक्षत्रे अथ येति सप्त नक्षत्रे तानौषधपाता नौषधपाता नौषधपाता
 नापतिं प्रप्रा पतिरुषध अथ येति सप्त नक्षत्रे तानौषधपाता नौषधपाता नौषधपाता

आहो ना त प्रथा नये वताः पवमानसोऽहं स्थिपि पवमानं तनु नपा रश्मि पवमान
नंदुलोऽहं स्थिपि पवमानं वरिनिश्चिपि पवमानं कानोये वा रश्मि पवमानं दुषाश्चिपि पवमानं
स्थविता पवमानं अश्चिः स्थविता
हं पवमानं पावमाना नये ता नौ
ता नौ वेताः स्थिपि कतु मित्तानि
आ वाया यः पवमानं पतये न त मने
दि आहोऽहं स्का नयेथा नाप्ता नाहो ता गां रं कतु निश्चिपि पवमानं नपडं गुन वरा स्का यथा
कु मवये त्वा स्वा निश्चिपे तिन वर स्थिपि कु स्था वैरवा मि त्तम धु चं नः पवमानसो

प्रोगा पत्नी पव प्रान पथा वज्रा क्य सो मे वि वि प्रोग भस्व निष्ठि जा प्र निष्ठि जा प व स्व सो प्रथान
 पाई को प पा त वे सु त भ स्वा क्य सो प्रोग प व प्राना पे रं न प्र प्रेति स के लो के रा सा गं क पत्ति
 न सो आ वि स्व वे पी ता नु ति यो नि प्र यो
 प्र भ व नि वो था त प्रो त व प्री रं लो व
 सो प्र भ क्य ता प प्रि आ ना ने वा नां क
 सो प्र भ ला प्र वृत्त व नां प्रे सि ता न र धं
 पु ना ति वे प नि सु तं सो प्र
 आ सो प्र भ त प्री प्रा काः स प्र य प्रि वृत्तं ति यो प्री प्रे रं स्व स्त्री नः पा र्जे नि वि स्वा क्य
 सो प्र भ त प्री नि ले ता यु वो थ प्री ति वा कु नं ति ता वि था त वा नां प्रि थु स्वा क्य सो प्र भ

अती॥१॥ममपुत्राउतस्यगातिथेनवृक्षस्य।सोमपुत्रांकांपपातेवेस्वाका।सोमपुत्रास्येति
 सोमपुत्रावस्वावृक्षानिपुत्रो।सुनोमपुत्रावृक्षोतेस्वाका।सोमपुत्रपवस्वनेवपीनतिकावा
 मेधपतिमिमायती।सोमपुत्रपवप्रावो
 नेवकीनतिपुविर्त्त।सोमपुत्रांकांकां
 दिपुत्रोवृषेनोद्युक्षवृत्तममम
 पुत्रतपिपमपुत्रपुत्रासुतस्यवे
 स्वाका।सोमपुत्रपुत्रांतंलापुत्रावृषोपांकावृति।सोमपुत्रपुत्रोतिवीर्यापिप्रासेस्वाका
 सोमपुत्रपुत्रोकापुत्रपुत्रोविष्णोत्तवृषांकावृति।सोमपुत्रपुत्रोपवितेअस्मपुत्रपुत्रपुत्र

५

॥ सोमप्रभप्रविष्टं नृपाणां प्रियां नृपस्य सतिभर्त्सुषु येषां सोमप्रभतेष्वाद्या सोमप्रभगिनस्त
 ईरुङ्गि आप्रभ्रुङ्गं तेन पश्य वभ्रपातिप्रना पश्यं तये । स्काद्या सोमप्रभतं ताम्रनाय पृष्य
 लोकक नृप्राप्रभो । तव परास्त यो प्र
 वस्वथान प्यापक नो वसिष्ठा इवास्का
 सापुताङ्गा ताम्रपुष्प कभस्काद्या
 ये पोस्ते मृप वभ्रानो गाय त्वापवभ्रान प्रथानाङ्ग दोमे विप्रपपदे वो मभ्रतः पाणि वनिव
 श्यति मभ्रति कोपा न्यासः । स्काद्या सोमप्रभपपदे वो विपाक जो । तद्व नं सिध्वा वति ।

पवमादोदकात्तमस्कासासोममपुषदेकोविपुन्रतिः पवमाननृदापुतिभयनिकानिपमन्त्र
तेस्कासासोममपुषद्विस्काविकाप्रासुनोपादिवसलतिभपवमानः सिषास्यतिस्कासासोमम
पुषदेकोसंधपतिपवमानोत्रसस्य
पुषद्विषैरतिष्ठतोपोदेकोविगार्हते।
विध्यवतिविरोनकांसिथानपाप
षादिवकासंरतिरोनकांस्यस्ततश्च
नमन्नादोकोत्रेवेत्तिःस्य तश्चरतिःपावलेमपतिस्कासासोममपुषद्वि
पवमानस्यथनमस्कासासोममपुषदे
नमन्नादोकोत्रेवेत्तिःस्य तश्चरतिःपावलेमपतिस्कासासोममपुषद्वि

ॐ ह्रीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
पञ्चमोऽध्यायः ॥ पञ्चमोऽध्यायः ॥ पञ्चमोऽध्यायः ॥
स्वाध्यासोऽथ भगवत्पूजा ॥ स्वाध्यासोऽथ भगवत्पूजा ॥
मन्त्रस्य नाम ॥ मन्त्रस्य नाम ॥ मन्त्रस्य नाम ॥
सोऽथ भगवत्पूजा ॥ सोऽथ भगवत्पूजा ॥ सोऽथ भगवत्पूजा ॥
अथ भगवत्पूजा ॥ अथ भगवत्पूजा ॥ अथ भगवत्पूजा ॥
तत्र भगवत्पूजा ॥ तत्र भगवत्पूजा ॥ तत्र भगवत्पूजा ॥
सर्वभूतहिताय ॥ सर्वभूतहिताय ॥ सर्वभूतहिताय ॥
सर्वभूतहिताय ॥ सर्वभूतहिताय ॥ सर्वभूतहिताय ॥

नपिंते। ख त प्र ख त जिं को विखा पु मा ते न।
सो प्र म स मि धो वि ख त इ तो का न रा व स्य सु ह्य स्य। का र्य पो दे व लो वा आ धाः स त्रा ग्ग न
ह्यः अं त्रा स त स्यो नु शु त्तः अ म्नि स
का यो ता नो प्र वे त स्यो ति स्यो दे वः
क तु पो श्विः प व मा वा इ ति प त्प
मा नो वि ना क ति प्रा ण वृ षा क नि ध
व मा नः स गे रि रा स बो म्प ति। अं त नि के ता ना व क्त्वा स्या त नु न प त पे अ म्प ये पा डी ने
न्यः प व मा नो न पि वि ना क ति च मा नू। प्र यो धि ना ति नो क्त्वा स्या त् इ म्पो अ म्प ये पा।

अ धो नो व स्य स स्य वि। स्यो द्य
बु न पा ड लो व र्दि दे वी काना रु षा स्या न् क्त्वा दे
स न स्य ती ता न त्पः स्य श्रा व न स्य तिः स्या द्य
र्य दे व ताः स्य मि छ्यो वि ख त स्य तिः प व
न द्वा स्या स्य मि थ्यो म्प ये पा त नु न पा त्प

वापुर्वदुस्मातः सुयो। निर्विदः स ओ प सम स्वादा स्वादा कती तपो द्य पे प इत्यै का र श न
ह्यै का र श ने व ते रं न म दा बा मं इ पे त न व न स्प का र प पो। सितो स्ये प्रः प व मा मो गा प वी
मं इ प्पा सो म था न प्पा वृ षा प व स्व ने व
ति त्प म्प म्प म्प म्प वि द्वा वि क न ना म
तर्पु र्म म्प रं सु का नो अ ष प वि व म्प
स्मा स इ रं व म्प पो न प्र व ता स न द्वा प
मि व वा कि न म्प म्प ति पे षा पो र श न व
वृ षा न र्म म्प म्प ने व की त पे। सु रं त ना य र्म स म्प स्वा दा सो म्प म्प ने को रे वा प्पा न र्म इ
य प व ते सु त म्प प पो य न स्प पी प प द। स्वा दा सो म्प म्प म्प वा प न स्प रं द्या सु का

ताः प व ते सु त भ प्र त्र नि पा ति का र्वा स्म द्या सो प्र भ ७ का पु न न र्द ३ उ र्भ र्द ३ इति वि त पे
 गु द्या वि न र्द ३ धि वे गि न र्भ स्म द्या सो प्र भ अ स इ मि र्द ३ व द्वा ति त वे व स्य का र्वा पो सि तो सो प्र ९ प
 व प्र भो ग पा प सी अ स य मि र्द ३ व ९ प धा य र्भ न त स्य सु सि प भ वि न नो अ स्य पो न र्द ३ स्म द्या
 सो प्र भ प्र था ना प्र था द्या य पो प्र सी न
 प्र भ प्र पु नो का नो अ य पो व पा व न र्द
 प नि प ला का का वि न र्द ३ व आ नो अ र्भ
 ति स्म द्या सो प्र भ प व प्र भो अ ति स्य
 थ स भ स्म द्या सो प्र भ अ नो दा ने प नि प्र यो अ नि व ने पु सी र ति ने तो व न प्र ते प्र सी स्म द्या
 सो प्र भ स वा पु मि र्द ३ प्र सि न्ना सा कं म ने न न व र्द ति नि ना प

पो वि ना र्द ३ त र्द ३ वि वि षु र्द ३ र्भ स्म द्या सो
 न र्द ३ वे स्म द्या ति स त्यो अ य न भ स्म द्या सो प्र भ
 ति स्म द्या सो प्र भ अ ति स त्यो अ य न भ स्म द्या सो प्र भ
 थो वि र्भो ना नो व स्म द्या ति यि सी प्र ता र्द ३ ति वे
 पो अ स्य थ र्भ ति न

स्वादास्योऽथ अजितो वरुण तर्गं प्रथः पर्वतं प्रथविना
 सोऽथ अजितो वरुण तर्गं प्रथः पर्वतं प्रथविना
 तिनववस्त्रकार्यपोस्तितः सोऽथः पर्वतं प्रथविना
 ब्रावर्तं तो अजितो वरुण तर्गं प्रथः पर्वतं प्रथविना
 नोऽथः पर्वतं तो अजितो वरुण तर्गं प्रथः पर्वतं प्रथविना
 आदिनोऽथः पर्वतं तो अजितो वरुण तर्गं प्रथः पर्वतं प्रथविना
 सप्तधातयश्च अजितो वरुण तर्गं प्रथः पर्वतं प्रथविना
 तिमेष्यश्च अजितो वरुण तर्गं प्रथः पर्वतं प्रथविना
 निगच्छान्नवरा स्वादास्योऽथ अजितो वरुण तर्गं प्रथः पर्वतं प्रथविना

[illegible]

प्रा. बो. गा. प. ली. प. नि. प्रि. पा. दि. वः क. वि. र्व. प. सि. न.
 स्वा. रा. स्तो. प्र. क्ष. प्र. प्र. रा. पा. प. न. प. स्तो. क. ना. प.
 स्तो. प्र. क्ष. स. सु. न. मी. त. ना. रा. वि. की. तो. का. ते. क्ष. नो. व.
 प्र. क्ष. स. स. स. थ. ति. ति. दि. तो. न. धो. क्ष. क. व. त. व. र. न.
 म. ति. र्स्ति. त. म. स्त. तं. म. रे. पु. वा. व. म. रा. य. थ. म. उ. र. म.

बुद्ध्यासे न वी प से सु क्ता प सा य पा प छ भ ३ व व को व पा न व भ स्का रा प व भान भ्रा रु से को वा
 प्र खं ना सि वा न व व स वा मे धां स ना स्य भ स्का रा सो भ भ ३ स्का वे ति वू वे व स्थ का र्य पो
 सितः सो भ ३ प व भानो गा प वी ३ स्का वा सो न धा ३ वा र्वा तो न स व स्थ व भ
 सो भानो ना पे भ ३ भ ३ भ ३ स्का रा सो प्र भ रु को वा सो न धा ३ व र्वा नि ने वा त
 स्यो भ त ना सः का नि ता नि वा स्का रा सो भ भ ना भानो न प्र रा स्ति तिः
 सो भानो गो ति नं के तो प सो न स स या त ति भ स्का रा सो भ भ प नि सु वा ना
 स ई न को भ भ प व रु मा नि ना सु ता भ ३ ० ति धा न पा स्का रा सो भ भ भाना पा ना सो दि व
 स्व तो क नं तं पु ष सो त र्गी सु ना भानं वि ते न ते स्का रा सो भ भ

अपदा साप्रतीनां पदानां पूर्ति कान वन वृद्धो अनसौ आ प
 सो प्रमसमावा नासमा सते दो ता नः सप्तमा प्रपमपुत्र मे कस्यपि प्रतमस्य सा सो प्रम
 नाता वानि नमा न देव कुप्यस्यु येन
 ति पिपादि वस्य न प्रपु पुति गु सा
 उपास्य अति न वे वस्य कोर्य पोसि
 गायता न नः पवमा नार्थे न वे अति
 नाप यो घ कीतो अयि स पुम दे वं दे वा न दे व पु सा सा सो प्रम स नः प व स्य र्ग न वे र्ग अ ना प
 याम व तो र्ग सा न्नो पथी तम स्या सा सो प्रम बत वे नु स्व त वे से नु ता प नि वि स्त रो सो मा

पमाद्यप्रवृत्तस्थानासोमप्रवृत्तस्थानासुतोतिनादितिः सुतं सोमं पुनीतनामथावाथावता
मथु। स्थानासोमप्रवृत्तस्थानासुतोपसीततयधेयतिस्तीमातनाइडुमिदयथातनास्वादासोमप्र
अमितलयाविवर्षाणिः पवस्वसोमरा
इंद्राजसोमपातवेमराजपनिषिक्ता
पवमानसुकीर्णनर्पिसोमनिनादि
अस्यप्रतिनिवृत्तकारणपोसितः सोमः पवमानो गायत्री। अस्यप्रतिनिवृत्तः पच्यधुमि
नृत्तस्यस्यसिजध्वविमनास्यध्वजनी। सोमाअस्यप्रतिनिवृत्तः सुतांततस्यसातने।

॥

इंकापप्रथुप्रतमाभस्वादास्योप्रभप्रतिविज्ञाश्रुतपतगावोवर्षनप्रतनभइंइंस्वोसोप्रस्य
पातयेस्वादास्यप्रभप्रस्यनुतातिस्यानुनेसिंथानुप्रोविपसितस्वोप्रोगोनीप्रधिस्वितभस्वादा
सोप्रभदिबोनाताविस्वताताकोवानेप्र
प्रभपःसोप्रःकलसेषाश्रुतःपवि
प्रभप्रकावप्रिंनुनिषातिस्यप्रवस्याथि
हित्तस्थोकोवत्तस्यतिथिनाप्रतःस
प्रभप्रतिविप्रदि वस्वदास्योप्रोसि
कास्योप्रभप्रपवप्रानथानपनपिंस्वस्वववर्षाप्रस्वइंकोस्वातुर्वास्वादास्योप्रःप
वत्तनायेरूपस्योप्रःपुनानप्रतिनववस्वकारणपोसि तःस्योप्रःपवप्रानो

मापहो। ओ प्रः पुना नो अषति स रु स्रथानो अत विभ के जो निंद स्रान कृती स्वादा ओ
 प्रभ प व प्रान प्र व स्र को वि प्र प्रत प्र गा प त सु धा प्र दि व की त पे। स्वादा ओ प्रभ प वं ते का अ
 सा त पे सो प्रः स रु स्र पा क स्रभ
 नो वा क सा त पे प व स्र व रु ती नि
 ते नः स रु स्रि पा नि पि प रं तो मा सु
 प्रभ अ स्र रि पा ना न रु त नि न स
 स्वादा ओ प्रभ वा सा अ पं ती न के
 सा सो प्रभ रु स्र रु पा प्र ह नः प व प्रान क नि रु व। वि स्वा अ पा दि षा क दि। स्वादा
 सो प्रभ अ प पूर् तो अ नो नः प व प्राना स रं रा भ जो ना व त स्र स्र

गणनादेवकीतये। स्वादास्ये प्रभुत
पन्चमद्विंशो सुवापी स्वादास्ये प्रभु
कीपी। सुवानादेवासाद्वद्वम स्वादास्ये
संकाशे सातये। विकान्प्रवासावम
तिवर्हानयेनवमदध्विनेनतस्त्रयोमस्वा
द्विंशो सुवापी स्वादास्ये प्रभु

दत्तास्काद्याः सोऽप्रभः पतिप्राप्तवस्थः कायः पोः सितः सोऽप्रः पवः प्रभोः गोः पत्नी
 पतिप्राप्तवस्थः कायः पोः सितः सोऽप्रः पवः प्रभोः गोः पत्नी
 नोऽसर्वं थः कः पः नः वाः काः अः पः स्थः वः भः पः नि
 आगोः नः सेः विः स्वेः येः वाः अः प्रः सः ताः पः दा
 विः थाः वः तिः अः नः नः पुः पोः गोः ताः बाः अः
 तिः पोः विः वः स्थः तः सुः तोः नः माः मः केः पुः का
 अतिः सिः ताः विः नः यः ताः गः वः का
 दाः सोऽप्रभः अतिः सिः पः सः प्रः अतः मः केः पः ताः निः पुः सः पः तिः पिः ताः विः देः स्वा
 सोऽप्रभः पतिः विः काः विः मः सः विः स्वाः विः सोऽप्रः पाः धिः काः वः सुः विः पोः सः पुः नः स्वाः दाः सो

मन्त्रपथि ये त्वाष्ट्रं रस्त्रं कास्प पो। सितः सोमः पवमानो गा यत्वा। पथि जाया त्वाष्ट्रं सु
 नोनचेति तासु तिष्ठन्मन्त्रं नृणां त्रैलोक्यं कर्तुं। स्वाहा सोमः पवमानो यत्वा ते ब्रह्म ते देवता
 तपे। पत्वा मत्वा तासु स्यासते। स्वाहा।
 घ्रापसी तुं कर्तुं। तत्ता पञ्च स्वाहा सो
 वृषा नृणां त्वाष्ट्रं रस्त्रं कास्प स्वाहा
 सुतिष्ठन्मन्त्रं पतिः सिंघुर्नातव नृणां स्वाहा।
 अति। अत्रादेः पुनश्च त्रैलोक्यं स्वाहा सोमः पवमानो गा यत्वा त्वाष्ट्रं सु
 मन्त्रानि पञ्च स्वाहा सोमः पवमानो गा यत्वा त्वाष्ट्रं सु।
 किं पौमं कर्तुं त्रैलोक्यं त - पञ्च स्वाहा

सा पुर्वं मुनिं तं मां स्वात्मा सोमश्च प्र ते स्तोता न इत्यत्र स्वकार्यपोषितः सोमः पवमानो
 गापता। प्र ते स्तोता न इति पोषणं न संशयः पृथगे। स गेन तं कृतं तं राक्षसात् सोमश्च कृत्वा
 न सं स्पृशन् धर्मो वसो न धर्मो स्मा
 तमश्नुतु शनं सोमं पवितुं शक्यम्।
 स्पृशे तसा सोमः पवितुं शक्यं त्रिंशत्
 तिनितं वदं इत्येवमाह स कृतं मे मे त
 काये विरवाहर्षं न तिस्रं शसुना न गोषु। तिस्रं शसुना सोमश्च नितो न स्नानं पिपुषा
 धानास्तु तस्मै वेधसो भवधः पवितुं शक्यं तिस्रं शसुना सोमश्च नितो न स्नानं पिपुषा

तं तद्वा पुत्रा ब्रह्मा पुत्रा अको वानं विष्णु वसिष्ठा स्वादा सोमः प्रभुः प्रविष्टो वेत्ता प्रवक्ष्य कायपो
स्वितः सोमः पवमानो मायता प्राज्ञः
आ अस्वमा रावभस्वादा सोमः प्रभुः
इन्द्रः सोमः सोमः सनत्तु स्वादा सोमः
अर्वाति विष्णु वानं विष्णु वसिष्ठा स्वादा
षिकते उक्ते पुत्रो वयं तो स्वादा सोमः प्रभुः अतिवो सोमः प्रवो वानं नो दानं नो दानं सोमः प्रवो
इन्द्रः पुत्रो वयं नो दानं नो दानं सोमः प्रभुः अति

श्वेते वासिष्ठा वानं तो वानं तो वानं तो वानं तो वानं तो
तिष्ठे वानं तो वानं तो वानं तो वानं तो वानं तो
प्रभुः अतिवो सोमः प्रवो वानं नो दानं नो दानं सोमः प्रवो
सोमः प्रभुः अतिवो सोमः प्रवो वानं नो दानं नो दानं सोमः प्रवो
विष्णु वानं तो वानं तो वानं तो वानं तो वानं तो

वापु ना नो मंत्रि कुत वा मनेषु स्वात्मा सो मम पश्येति स प्रवक्ष्य कायपपो सितः ॥
सो ममः प व म्मा नो मा प त्वा पश्येति स प्रवक्ष्य सु कर्णं नि कर्ण पार्श्वे व व सु । तं नः पु न्ना न ज्ञा तं
न । स्वात्मा सो ममः प वं नि स्थ स्व
पिपा तं स्थि प म स्वात्मा सो मम व
रु निः स नू जे । वि मा स र वा स्वात्मा सो मम म्मा क व रं तथा त यो व व त स्या त्ति ने त स्ति
सु नो व ह्ये स्वात्मा त न म स्वात्मा सो मम कु वि देषा र्ण ती त्तः ॥ पु न्ना न ग तं मा र थ वा

१३

पाः सुखं देयं ते पञ्चस्य सा सोमं उपायिका पतस्थुषाति पसमाथे दिसा तु पु। प व मा न वि
रान = पि। सा सा सोमं निरातोः सोमं वत्तमं निरुष्यं नि वपा स्तन। उने वा स ले झति वा स्वा
सा सोमं प्रवक दी। तिस्र स व स्य का रण
वकीतये यो वा नेति न षति। सा सा नि
तत्तमा वा र्जं गो र्जं तमि त्वेति। प व मा
येत सा प्रया सो प व से प्रती। स नः सो
मप्य व स्यो य व न पिं ड्रि पं सो तत्तमा तेन। सा सा सोमं त्वं ना मे व सु व तो गिनेः सोमा व
वसि धा पु न्ना तो व स्ये झ तु ता स्वादा। सोमं स व द्धि न सु उ स नो म ह्य मा नो ग त स्मा न सो

प्रसमुपुष्पासतास्कासासोप्रभकीलुमसोनमरुपुःपविर्लसोप्रगकुसिदिचस्तोवे
सुकीपनिस्कासासोप्रभपतेथावतीतसप्तवस्यकार्यपोसितःसोप्रोगापदीपतेथा
वृत्तादिकसोप्रादिकोपलपुष्यप्रभ
तोमतिपुमःसुषयेवनकावि
प्रभवधाकीर्त्यतद्रुचकःसन्धस्थ
स्कासासोप्रभपतेविस्कातिकार्य
धे।स्कासासोप्रभसास्मिन्पिर्सांमिर्नकेरथातावेनप्रादिसो।पोमस्मत्प्रभनाका
स्कासासोप्रभनतुननधर्नवृत्त्याताकेतमप्रादिसो।रुकाःपवधुमासा।स्कासा

ओ प्रमं तं तं लेन की व स नू का क्षां व नू नो क्ष क ता स तः पा स्या नु षु क्षां हिं स्कां सा सो प्रमं प ते
 सो मा द्रा त स स व स्य का स प पो सि तः सो मः प व मा बो गा प ली प ते सो मा स मा स को न धा द व
 प्र का क्षि न भ स माः स मा क्षि रो ष त र सा
 स प म क्षि नो वि व त प्रानु धा स मा सा सो
 न क्ष वि पा व रा नू सु वि प क्षि सा सा सो प्रम
 प क्ष तः प धो न क्षि सा सा सो प्रम प ते
 मु त्र मं न क्षि सा सा सो प्रम तं तं त द्वा न मु त्र मं न प्र व त मा स ता नू ले न मु त्र मा प र्मा सा
 सा सो प्रम त्वं सो प्र प णि त्र मा व सु न व रा नि धा न प म त तं तं तु प्र म व क्षि न सा सा सो प्रम

नवस्य सोमनाथस्य मितिकारणपोसितः सोमनाथपत्तः सोमनाथस्य मितिकारणपोसितः
माराको मया मरिस्थानपा मतिविस्मयनका वरुखा सोमनाथपत्तः सोमनाथस्य मितिकारणपोसितः
नवीपो मया मरिस्थानपा मतिविस्मयनका वरुखा सोमनाथपत्तः सोमनाथस्य मितिकारणपोसितः
विप्रकावती निषम स्वासा सोमनाथ
कोरां मथु सुती स्वासा सोमनाथ
वनो मतिरास्ति पाथ स्वासा सोमनाथ
कार्कसि वासस्ति स्वासा सोमनाथ
न ऊपनवन स्वासा सोमनाथ प सोमनाथ इति सप्तस्य कारणपोसितः देवलो वा सोमनाथः
पदमना नो मया मरिस्थानपा मतिविस्मयनका वरुखा सोमनाथपत्तः सोमनाथस्य मितिकारणपोसितः

स्यै वैः स्ये त ते वषा क विष्णो वा वधि विष्णव वलसा ने व वी त प्रथस्वासा स्यो प्रथ विस्वा नु पाप
विश कु ना बो वा त स प त भ प ता प्र ता स्या स तो स्या सा स्यो प्रथ स्रु वो क न प नु नि नः स्यो
प्रः प व त स्या पु च कु रं न न च का वि
नित प्र प वि त्त आ न पा क वे अ क स्य
त स त प ल व स्य सा ल्य नु ते च्छ का सः
अ न ते न य वि प्रो सो अ पा वा धि पा
आ न स्रु ती रं न य ता न स्रु न व स्रु सा स्यो प्रथ त वे य पा स्रु न व स्रु न स्रु य वि
था सा सि तु नि व पा प सी स्वा सा स्यो प्रथ त स्रु न तु नि सो यि पा स्रु व सा नी व व स्रु त म पा त

[illegible]

त्वाप्यकविनतिष्ठतः पवित्रेऽपि तोराते ।
 त्रापकापवेस्वर्गि त्वापि च त्रे । पवित्रे न कञ्चा
 कोष्ठ्या विष्णुस्ततश्च सोमो वने पुविस्वविद्याम्
 क्रिनाप्यपुत्रं इन्द्रोऽस्तत्वात्तत्र तमस्तत्वात्
 विपवित्रे प्रहृष्टोऽस्तत्वात्तत्र तमस्तत्वात्

[illegible]

॥८॥

सोऽवधस्मिन्नुत्तु कर्मास्वादा सोऽप्रविस्वा वस्तुनिर्वा पन्तवस्व सोऽप्रथानपात्रुत्तु वे वास्वि
संथ्र कुस्वादा सोऽप्रश्नका सुतो ज्ञानं पुरुष ना हा प्रस्थ कस्थविवा निदो पलभु भुक्तु सोऽस्वा
दा सोऽप्रश्न पंदो पा धिर्विपिंदि त्वं प
प्रश्नप्रथा रा इति पलव स्थाग्निन सोऽविं
वृष्टा पा विद्वेज्ज क न नू पुना नो कवास्मि
ज्ज प्रानः कानि क र व इ पति व सुमि
न र्वत् पुनु स्मर्त्ता प व स्व सोऽप्रथान पात्रुस्वा दा सोऽप्रश्न प्र सोऽप्रोऽप्रतिथान पा पु व मा नो अ
स्मि पत्रुत्तु अति को ता न्ना सदी स्वादा सोऽप्रश्न अ सु ता प्रथु मत्त म्नि र्निदि व त्ता वि

निमिर्द्विदिपषातयेस्कादासोऽममसुनोतामथमहमसोममिर्द्विपवद्विमोविनुंसय
पमसुनास्कादासोऽममसोमादतिपलवस्पर्हनायुगाणेमोतमःसोमःमापत्तीप्रसो
मासःस्कादासोऽममसुनोतामथमहमसोममिर्द्विपवद्विमोविनुंसय
दिवसमध्विचोऽमध्वितवैदोद्युमव
तुत्तंवातामतिपयसुत्तमपति
ममसोमममापपस्वममेतुसेविस्वतःसोमवृत्तीतकावाक्यस्यसंगधोस्कादा
सोमममुत्तंमाकोप्यत्तपपोवत्तोउउद्वेअतितावविष्टेअथसामविस्कादासो

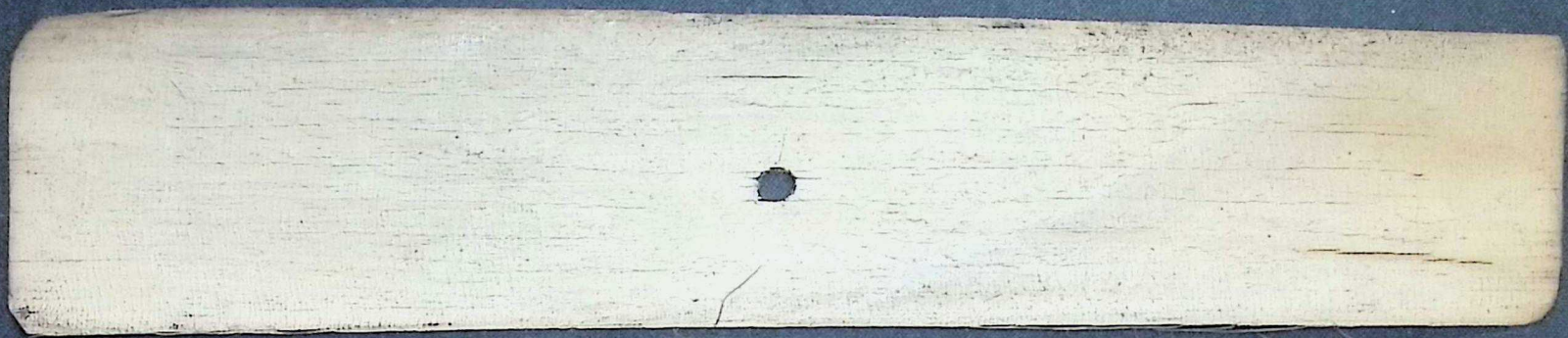
9.

अथ स्वापुत्रस्य ते सुतो न वनस्पतेर्वर्षा इं सोऽस्वित्वमुस्मिन्स्वादासोऽममवसोमास इति
पलवस्माते पश्या का स्वः सोऽमः ह्यपसोमा सोऽमदमुतः स वसे ह्योम प्यो नम वि तम वि दधे अ
थ अमस्मादा सोऽमममादा तितस्मा पो
स्मादा सोऽमममादा र्दं सोऽप धा ग र्दं
तोऽस्मादा सोऽमममु ते सोऽमा व वा क र्दं
स्मादा सोऽमममति ना को अ नु प त
स्मादा सोऽमममस्मो पे दि पु म्म र्दो अ प व ह्य स म र्दं वा स र्दं मे प म्म त स व म्म स्वादा सो
अमवसोमास इति पलवस्मात्स्वित्वं सोऽमः मापवसोमा सोऽविपस्वितो पानर्पं तमु

अथैव नानिप्रदिषादेव स्वाद्यास्यो प्रभृति को पा ॥ न व न वः सु द्वात स्थवा न प्प का न्गो मीत म
न न न्वा स्वाद्यास्यो प्रभृ सु ताई को प वा प वे व नु पा प प नु प्रभृ सो प्रभृ व न ति वि न्ने वे स्वाद्यास्यो प्रभृति
स्यो क सु रु सी न ते ग्ग वी प्रि मी ति ये व वं
ई र्छी न नु प त न र्क्षी न त स्थ मी त न न म
सु सु को स्य त नो र्क्षी त न सो प्र वि र व त न
कान र्क्षी व न व स्थ मी त स्थ तः सो मः
ति नु क न न्वा को क स्वाद्यास्यो प्रभृ सु त ई को प वा प वे व नु पा प प नु प्रभृ सो प्रभृ व न ति
वि न्ने वे स्वाद्यास्यो प्रभृ व न पा व व ति य त सु वं ति सो मी म ति नु र्क्षी त रा क म्ना प प म

9n

स्वाशास्त्रोऽथ भूतवत्तितस्वभूतं त्रिविदिशो यः प्रसूतं सन्नुपै न भूते रु निश्चिन्नाशास्त्रोऽथ भूतवत्तित
स्वविश्वं त्रुय ते पृथिव्या तनमस्वभूतं सन्नुपै न भूते रु निश्चिन्नाशास्त्रोऽथ भूतवत्तित
नमस्तु तादृशं गनोऽथ पृथिव्या तनमस्वभूतं सन्नुपै न भूते रु निश्चिन्नाशास्त्रोऽथ भूतवत्तित
तिष्ठेत्तु सन्नुपै न भूते रु निश्चिन्नाशास्त्रोऽथ भूतवत्तित
पृथिव्या तनमस्वभूतं सन्नुपै न भूते रु निश्चिन्नाशास्त्रोऽथ भूतवत्तित
नामोऽथ तनमस्वभूतं सन्नुपै न भूते रु निश्चिन्नाशास्त्रोऽथ भूतवत्तित
तिष्ठेत्तु सन्नुपै न भूते रु निश्चिन्नाशास्त्रोऽथ भूतवत्तित
स्वाशास्त्रोऽथ भूतवत्तित सन्नुपै न भूते रु निश्चिन्नाशास्त्रोऽथ भूतवत्तित



अवाजीस्वासासोऽक्षसहितस्वाधिसानविपदेभाबोअनोवपव।आप्रतिःसुर्जस्रस्वासासोऽक्ष
संदलसावषासुसोवनि कोविनरात्प्रक्षसोऽक्षोकाक्षिवासनत्वास्वासासोऽक्षसदेवःकविनापुतो९
०तिडोपाग।विधावति।इंउरिडोपपुंर
नारुयपाःसोऽक्षःभापलीपपुस्वरुषा
गीस्वासासोऽक्षपुतीतितस्वपोषाग
सासोऽक्षपुतंतीरुनितोउरुअक्षि
सोऽक्षपुषस्वासावषासायेनोबवि
पुषस्वासासोऽक्षवसेउरुअक्षिपुइंउरुवनि
अनिनबलित्यगसिअक्षकंउरुअक्षिपुइंउरुवनि
स्वासासोऽक्षपुषस्वासासोऽक्षपुषस्वासासोऽक्ष

वास्वासासोऽक्षपुषस्वासासोऽक्षपुषस्वासासोऽक्ष
उछोकोकानेतिनषसिगिगुवाइंसरुसि
रुविडिबंताडितिअइंउरिडोपपातपेस्वा
तेअपस्ववअपातिअपापयुंतेतेस्वासा
सासोऽक्षपुषस्वासासोऽक्षपुषस्वासासोऽक्ष
नषस्वासासोऽक्षपुषस्वासासोऽक्षपुषस्वासासोऽक्ष

७२

बुद्धमतिः सोमः कीमासु न बुद्धमते पतिवि चे ताथा ह्यापलने कात्र विव वेनू खासा सोममपनि कु
तावन्निष्ठतं कृत्वा पपात पंविषय वृष्टिदिवः पति स्वकासासा सोममसु तपति पवित्रकाल विविधानु
कृत्वा विवका तागे विनोदपनू खासा सोमम
नुमा वरुनतु खासा सोममसा विवका
याते मधु खासा सोममसा
वृत्तस्य सा रता खासा
सो बुद्धमतिः सोमः कीमासु न बुद्धमते पतिवि विरका मयो वरुषा मधुसु तीति विपंथा
ति तिष्ठ खासा सोमम अयो निमनु गो नु रु म मति ई व पासु तं पु वे सने सा सा

[illegible]

तस्ववृत्तापिपञ्चस्वादासोममप्योमते । तेषामयस्य काताकोमेथातिधिःसोममप्यं त्वा
 योमत्तपुत्रममृतेनोतिमनस्यमपुतमर्तना । तिकोस्योमसिस्वादासोममर्तनोविस्का
 मवस्यकोमनःसोमं ततिपुवध्यात्
 यातिरुपतःसोमोमागतिःपविष्क
 पवमानवितानपिमस्ततांसोमसु
 ईउनतपोनकाकसुक्कनिर्भतिपवि
 पवस्वकाकसातयेविप्रस्यगतातोवृथे । सोमनास्वसुवापीस्वादासोमम

प्राग्वतिष लवस्मां गिन सोपास्यः सोमः पला प्राग्विरो मदेत न दुर्जिने विवनेष मिश्रति ने वा
 अयास्यश्च स्वादा सोमश्च प्रतीक सोधि पलादि तः सोमो दिव्यै पना कीर्ति विवस्यथा न पा कविः
 स्वादा सोमश्च अर्पये वे विष्णवे विष्णुत
 दा सोमश्च स नः पवस्वै का न पुष्यदा
 दा सोमश्च स नो त गायका प वे विवका
 सोमश्च स नो अथ वसु त पे ह तु विष्णवे
 सोमश्च स पवस्वैति ष लवस्मां गिन सोपास्यः सोमः पला अर्पये स्वमना प वे व व का
 ने व वात पे । इति विष्णो प पात पे स्वादा सोमश्च स नो अथ विष्णुत पे ह तु विष्णवे

पतिविवेकप्रसंगे प्रोपातिविवेकप्रसंगे
 तास्वानुप्रसङ्गावच्छिन्नविवाहप्रसङ्गा
 नःसुतावच्छिन्नप्रसङ्गे देवेष्वप्यप्रसङ्गा
 तुविद्वेषप्रसङ्गेऽपिस्वकीयप्रसङ्गा

तो राखे। ने कां ह्युक्ति त्रिंशत् वरीं। स्थापना सोमं प्रक्षुप्तं तत्वा प्रोक्तं वर्यं योतिरेव। स्थापना पक्व
 विद्वानां पेदुनो वधि। स्थापना सोमं प्रक्षुप्तं तत्वा प्रोक्तं वर्यं योतिरेव। स्थापना पक्व
 ते स्थापना सोमं प्रक्षुप्तं तत्वा प्रोक्तं वर्यं योतिरेव। स्थापना पक्व
 स्थापना सोमं प्रक्षुप्तं तत्वा प्रोक्तं वर्यं योतिरेव। स्थापना पक्व
 स्थापना सोमं प्रक्षुप्तं तत्वा प्रोक्तं वर्यं योतिरेव। स्थापना पक्व
 ने वकी तपे तत्वा प्रोक्तं वर्यं योतिरेव। स्थापना पक्व
 इति को प्रोक्ते वर्यं योतिरेव। स्थापना पक्व
 स्वतस्तु सुताक्ष इति वर्यं योतिरेव। स्थापना पक्व

१८

नृत्ती तर्ही धनोतिस्मि तात मस्तु रीस्वो स्मास्मो मभस्व पवस्व
धनं कपपर्वता नाथ सोम मभस्व तर्ही सोम मातु विवास्मा स्मास्मो मभस्व तं मर्मांति मर्मां पव
मा नरयस्व पर्वता पप्रस्तु रं मर्मां
तात तर्ही विस्मो मभस्व मातु विवास्मा स्मास्मो मभस्व
दृषापते। स्मा स्मास्मो मभस्व कदा नृत्ती स्मा
पते। स्मा स्मास्मो मभस्व मातु विवास्मा स्मास्मो मभस्व
मा पते। स्मा स्मास्मो मभस्व पर्वता नाथ सोम मभस्व तं मर्मांति मर्मां पव
स्मा स्मास्मो मभस्व पर्वता नाथ सोम मभस्व तं मर्मांति मर्मां पव
तं लेति पवस्व तात तर्ही विस्मो मभस्व मातु विवास्मा स्मास्मो मभस्व

तं सधस्ये ७ प्रयोदिवश्वानु सु क तपे मने । स्वात्मा सो मम सर्वं यत्तु क मयं ममा
प्ररु वतं मनीरातं पुनै नु नु माति । स्वात्मा सो मम मत स्वात्मापि मतिना मनी सु क तोदि
वश सु पापे मी वप धि ते न व स्वात्मा
न क सु री गो पा म त स्य वि ते ये
ममापे मरु त म न रो । मति
• सौ । तै र्व व स्य तव न वः का वः सो मः ७ म प व स्व व शि म स नो पा मृ नि दि व स नि
मप न मा व रु त नि ष म स्वात्मा सो मम त यो प व स्व यान पा य ना

आपवस्वप्रति

दीक्षा आप ओम् प्रम आपवस्वप्रति

स्वा आप ओम् प्रम आपवस्व

अथ ये आदि प्रः सु त सोमं पवि

प्रम नि वेऽ पा उपम सु प्र ओम् प्रमिं दीपा वरु प्रो सु नो तामथ म त प्री स्वा आप ओम् प्रम

तव तम ई नो अंथ सो नो वामथो वं सु तो पव प्रान स्व म उ तम स्वा आप ओम् प्रम त्वं यि सो म व

प्रपविर्त्तयान्ता क वो अ क स्व पो वि प्रान्ता

मो ति र्ना को अ धु ति म ई र्त्त वि दी पा त पे ।

अति प व र स्व नि नु सु न व ध्यः ओम् प्रम म

तमा म क पु नी सी दी पा त वो स्वा आप ओम्

प्रम नि वेऽ पा उपम सु प्र ओम् प्रमिं दीपा वरु प्रो सु नो तामथ म त प्री स्वा आप ओम् प्रम

तव तम ई नो अंथ सो नो वामथो वं सु तो पव प्रान स्व म उ तम स्वा आप ओम् प्रम त्वं यि सो म व

[illegible]

प्राविष्ठा विमोक्ष सा न धर्म नेप वेरु तो स्था का विष्ठा पाद सु स्था सा सो धर्म अस्प व
ता विनाथ वेप व सा व स्प उ ल्या नु क प स्था प त न्ना वि स्था सा सो धर्म ती रु त्तं वि अ उ व
तं रु नि व रा पु का नि वी डू डू मि त्रा प
व तु क्त सा का र प मो व ह्ना नः सो धर्म
प पः अ र स सा ध विं स्था सा सो धर्म
स प व त सा न वी स्था सा सो धर्म अ र्ण वि स्था वि ति पु न्ना नो तु व नो प रि सो
धर्म ने को न सु प मि स्था सा सो धर्म प रि ता नो व वी त पे का धा अ प सि नो अ त म पु न्ना न डू ३

१०१

विंश पुनस्वादा सोमप्रपर्व पक्षमिति वतु क स्य क स्य पो व ह्म नः सोमः गा पा पर्व पर्व क्क जो न्नीय
सापुर्ण पुर्ण पतिस्व वा सोम विस्व वा सो तंगा स्वादा सोमः ३ सो प घात व स्व वो प घात आ त म्प्य सभ
नि बर्हि विप्रिये सत्रं स्वादा सोमः ५ तनो
ति न रुति म् स्वादा सोमः पो नि बर्हि वती व की
वा स्वादा सोमः पनाति वतु क स्य का
रु नारुः पवित्रे नृपति विष्णु वसी सिने
ति रीतं धाना अ प स्य वं ३ ३ स्य स्य स्य प्रपदरा न्ना स्वादा
सोमः अति वा यो पातो न रा कर्त न क न्ना तु पता म्भ्रसे सोम सातये । स्वादा सोमः

वसिष्ठोऽप्यवक्ष्ये वेदकादुर्विदोऽपि
प्रथमं तेषां नामां तत्रैतु कस्य का स्य
तो त्रिको वपति वसुधैव कुटुम्बकम्
गिरि का वपति वसुधैव कुटुम्बकम्
समस्तजगत्तु त्रितो ना कं वसुधैव कुटुम्बकम्

सकावत् वसुधैव कुटुम्बकम् सखा सखा सखा
पो वसुधैव कुटुम्बकम् सखा सखा सखा
सखा सखा सखा सखा सखा सखा सखा
सखा सखा सखा सखा सखा सखा सखा
सखा सखा सखा सखा सखा सखा सखा

स्थादिको वसुतो वा छिक्का अथि पिवा बईरका तना स्था रा सो प्रभ तन ह्यु विरु क स्य का स्य पा
 व ह्या नः सो प्रः गा तन ह्यु म् दीथा वतिथा मा सु त स्यो थ सभ तन ह्यु म् दीथा वति स्था रा सो प्रभ
 ५ स्था वेन वसु वी प्र त स्य रे का व सभ तन व
 स्य प्रि र सु रो तन व स्था रा सो प्रभ म्
 व स्था रा सो प्रभ प व स्य गो कि रे स्य कि वि
 स्य गो कि रे स्य कि वि स्य कि ह्यो प्र ना पा
 स्था ह्यो म् ना तः प व स्यो वथा तन प व स्य वि प मा तन स्य रा सो प्रभ तन सो प्र प व मा नो
 विरका नि उ वि ता तना का वः सी रा वि व नि पि स्था रा सो

[illegible]

27

[illegible]

अत्र द्वापयद्वं वेकुरा पप्रु ह्यनपानि नो वि तपसि स्य वा स्वा द्वा स्ये प्रभ ५ प्रो पु क्ता व
प्रु प्रु वं गोतिर्ति मं पानि कतां दुं दुं वे वा द्वा पा सि पु भि स्वा द्वा स्ये प्रभ तपि द्वयं तु वे गो वि को व
ह्यं सी स्य स नि व पं दुं स्य द्वा दुं स्य नि स्य द्वा स्ये प्रभ अ क्ता तपि द्वयं तु वे गो वि को व
म वे पु क्ता स्व पि पु क्ता मि पि वे प्ता मि अ क्ता तपि द्वयं तु वे गो वि को व
अ क्ता तपि द्वयं तु वे गो वि को व अ क्ता तपि द्वयं तु वे गो वि को व
व स्य ते न स्ये म गो ना क्ता न तु वु द्वा वि क्ता म अ क्ता तपि द्वयं तु वे गो वि को व
द. नो वि सान्ति तपु म् अ क्ता नो तपि द्वयं तु वे गो वि को व अ क्ता तपि द्वयं तु वे गो वि को व

३३

[illegible]

निर्द्वैतमया निबन्धनात् तदा बोद्धव्यं सत्यमेवास्ति नान्यथा सोऽपि कस्यैकोकपास्तु तः
कथं विवेचयामासेन कश्चित् किञ्चित् पवित्रोक्तिः। अस्मिन्मात्रेण प्रमाणं इत्येतद्देष्टव्यम्
वृत्तित्वेन च पुष्पं तु तस्मात् साक्षात्
पादे तासां वरा ये आदिक्का
नेति ननु स्वच्छा सोऽपि

निष्कारिण उगिनिनासप्रत्य

२२

पते अस्मिन् प्रातिविंशत्यारं स्यात्तामको अस्मिन् विंशत्यारं स्यात्तामको
पवित्रमारा वक्ष विरक्तव्यतिष्ठेतामारा स्यात्तामको अस्मिन् विंशत्यारं स्यात्तामको
वाक्काव्यं तो अ व हो स्वा आ सो अक्षकपाव
तां संपर्त। स्वा आ सो अक्ष असा प्यं स
अन वा स्वा आ सो अक्ष सु त अक्ष्ये व
जेति अस्मिन् स्यात्तामको अक्ष असा प्यं स
ने। स्वा आ सो अक्ष प्यं स्यात्तामको अक्ष्यं सु
स्वा आ सो अक्ष स्यात्तामको अक्ष्यं स्यात्तामको

पते अस्मिन् प्रातिविंशत्यारं स्यात्तामको अस्मिन् विंशत्यारं स्यात्तामको
पवित्रमारा वक्ष विरक्तव्यतिष्ठेतामारा स्यात्तामको अस्मिन् विंशत्यारं स्यात्तामको
वाक्काव्यं तो अ व हो स्वा आ सो अक्षकपाव
तां संपर्त। स्वा आ सो अक्ष असा प्यं स
अन वा स्वा आ सो अक्ष सु त अक्ष्ये व
जेति अस्मिन् स्यात्तामको अक्ष असा प्यं स
ने। स्वा आ सो अक्ष प्यं स्यात्तामको अक्ष्यं सु
स्वा आ सो अक्ष स्यात्तामको अक्ष्यं स्यात्तामको

[illegible]

षोडशारण्यो ग्रन्थ इति पञ्चस्य अष्टादश
 पुत्रस्य र्द्विषोडशारण्यो ग्रन्थ पञ्चस्य पञ्च
 गणपः कविप्रभुत्वं स्वोद्वारण्यो ग्रन्थस्य
 कविर्द्विषोडशारण्यो ग्रन्थ इति पञ्चस्य

28

धातुर्विद्युतेन धेयुर्गन्ति प्यत वे। नृषां तांश्चक्षुः। तित्तिम् आरुप्यो ममर्तं सो वा नोप ब्रुम्ना तस्मै
 युं वाङ्माप प्यत वे। इति विदितवत्वाच्च नृषांश्चक्षुः। प्रश्नश्च विरक्तकलशं सुतो विरक्तः। अर्धं नृतेस्मि
 पक्षयुगे न गौ पुंतिष्ठति। स्वात्मा सो ममत्ता
 ततो मृधुः। स्वात्मा सो ममत्ता नः सो मर्षः। पव
 स्वात्मा सो मम पते सो म्मा म्मा म्मा म्मा म्मा
 स्वात्मा सो मम म्माति गवे। विवर्तये न
 ततो गो म्माति गो विस्वा अष पति सुतश्च म्माति पश्चि वा स्वात्मा सो मम पवस्व वा। गो
 म्माति पः सो म्माति वाति नृति तित्तिम्। म्माति विस्वाति का का। स्वात्मा सो मम

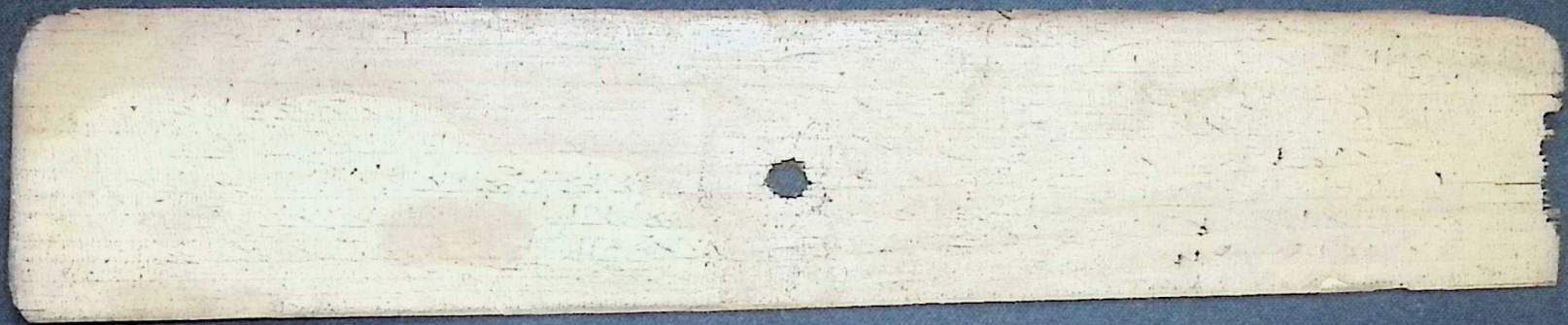
[illegible]

221

प्रथमं श्रुत्वा वाप वै। स्वाद्या सोमं प्रथमं तेजसं यथाशास्त्रे। तद्वत्तु वक्षस्यो मातुतस्य वा
 न प्या स्वाद्या सोमं प्रथमं तेजसं ततोऽपि सुतं कृत्वा पर्वतो विस्वमाप्य गङ्गापुष्पं तोडनात्तमस्वाद्या सो
 मं सुतामनु स्वमानात्तप पतिवत्तु वक्ष
 स्यथा न प्या प्या सुतं प्रथमं य पक्षद्वि
 न प तं रां प वं मातो मना वधि। मृतं तं न
 तो रसा सुतो मयु कृ पात वे रं उ विं उ
 तं गिन रं डा य म ह्य री म को वा रं ष सि
 र म तं सो म नु स रं। प्यो उ पा रा रं व नु षा ता स्वाद्या सोमं प्रथमं अत्त प स द स्या तां न पि गो मं

तुभ्यस्वदीक्षति कार्त्तिके तु तस्मै वक्षस्व सा सोमश्च सोऽग्नेये वो वसुधेदितिः स व ते सु वभन
श्रीवः क ल सो न स्तु स्का सा ॥ ५ सोऽग्नेय ५

२५
 एतेषां प्राजापयोरुक्तान्तरस्यथा न पृथक् काङ्क्षं गोमर्षं तस्मात्तत्र स्वाद्यास्यो मम सुता ईडापव
 क्षितो सोमोऽस्यो न पृथक् सार्वभौम पवित्व तस्मात्तत्र न तत्र स्वाद्यास्यो मम पृथक् सोमो मम पृथक् सुता ईडापव
 षपवित्व तस्मात्तत्र सोमो नैव की तस्मात्तत्र स्वा
 द्यास्यो मम तस्मात्तत्र न तत्र स्वाद्यास्यो
 वत्तु काङ्क्षं गोमर्षं तस्मात्तत्र स्वाद्यास्यो
 वत्तु ईडापव मम पृथक् तस्मात्तत्र स्वाद्यास्यो
 वत्तु वत्तु काङ्क्षं गोमर्षं तस्मात्तत्र स्वाद्यास्यो मम वत्तु पृथक् तस्मात्तत्र स्वाद्यास्यो मम वत्तु
 प्राजापयोरुक्तान्तरस्यथा न पृथक् काङ्क्षं गोमर्षं तस्मात्तत्र स्वाद्यास्यो मम सुता ईडापव



29

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

[illegible]

[illegible]



25

[illegible]

येनेमनुवर्ते पवस्वमथुम तममनुतं स्थाप्यो विष्णोः स्थाप्यो मम
तां विष्णोः यो विष्णोः पविष्णोः पविष्णोः पविष्णोः पविष्णोः पविष्णोः
नस्ते मितो मम पविष्णोः पविष्णोः पविष्णोः पविष्णोः पविष्णोः
स्वाध्यासो मम पविष्णोः पविष्णोः पविष्णोः पविष्णोः पविष्णोः
वा तन स्वाध्यासो मम पुनान्नर्त
विष्णोः स्वाध्यासो मम पविष्णोः पविष्णोः पविष्णोः पविष्णोः पविष्णोः
विष्णोः स्वाध्यासो मम पविष्णोः पविष्णोः पविष्णोः पविष्णोः पविष्णोः

४०

[illegible]

सुवे। आराम। ओ॥ अ॥ प्र॥ ओ॥ मा॥ प॥ त॥ स॥ व॥ त॥ व॥ ङ॥ वा॥ प॥ मा॥ प॥ त॥ म॥ रे॥ अ॥ द॥ स॥ व॥ क॥ ले॥ स्का॥ द॥ म॥
 ओ॥ अ॥ प॥ स॥ व॥ अ॥ म॥ य॥ स॥ त॥ रु॥ रि॥ नि॥ ब॥ ल॥ इ॥ ति॥ न॥ इ॥ नु॥ म॥ अ॥ प॥ पी॥ त॥ पे॥ स्का॥
 आ॥ सो॥ अ॥ त॥ स॥ ते॥ वा॥ कि॥ नो॥ व॥ पा॥ कि॥ स्का॥ थ॥ वा॥ नि॥ नि॥ अ॥ प॥ म॥ स॥ स॥ त॥ म॥ वा॥ वा॥
 अ॥ सो॥ स्का॥ आ॥ सो॥ अ॥ व॥ वा॥ प॥ व॥ स॥ वा॥ र॥ पा॥ म॥ न॥ त॥ ते॥ व॥ म॥ स॥ स॥ वि॥ स्का॥ न॥ प॥ न॥
 उ॥ उ॥ स्का॥ आ॥ सो॥ अ॥ त॥ व॥ पि॥ त॥ र॥ म॥ आ॥ पो॥ ७०॥ प॥ वे॥ म॥ न॥ स॥ इ॥ र॥ दि॥ त॥ व॥ का॥ ने॥ पु॥ वा॥ कि॥
 नी॥ स्का॥ आ॥ सो॥ अ॥ अ॥ प॥ स॥ तो॥ वि॥ पा॥ न॥ पा॥ स॥ ति॥ प॥ व॥ स॥ वा॥ न॥ जा॥ पु॥ न॥ का॥ ने॥ पु॥

[illegible]

इषं तो का प नो रथं रश्मि तं सो अवि रते अ पं व स्व अ द्वा स तं पे सो मा सः प स क त पे अ
 वा क त सु द्वि रो पे का नः यं प पा न के ता स्वा द्वा सो अ प प आ अ की उ क त सु पे म प पे प स्वा नां पे
 वा द्वा नं पु पं र स्या स्वा द्वा सो अ अ ते वा
 पं लि का ना रे का अ इ रं व न स्वा द्वा सो
 अ अ रं शि वा दि वा नो गो र थि लि वा
 का लि वा ना सो व स प प न स्या पा ना अ
 तु वे दि लि वा दि वा नो गो र थि लि वा
 वा क त सु द्वि रो पे का नः यं प पा न के ता स्वा द्वा सो अ प प आ अ की उ क त सु पे म प पे प स्वा नां पे
 वा द्वा नं पु पं र स्या स्वा द्वा सो अ अ ते वा
 पं लि का ना रे का अ इ रं व न स्वा द्वा सो
 अ अ रं शि वा दि वा नो गो र थि लि वा
 का लि वा ना सो व स प प न स्या पा ना अ
 तु वे दि लि वा दि वा नो गो र थि लि वा

४७

द्वि प्रथमं पण्यमोक्तं = मा पुनरुक्तं । स्वरूपस्य प्रथमं त्रयं वनेषु पण्यविषयोऽत्र
अथ पण्यं पौर्तु स्वरूपस्य प्रथमं त्रयं पण्यं वेतु न मासु कृतो तद्वेषा पौर्तु स्वरूपस्य प्रथमं
पवस्व विस्व वर्षादिति शतशतस्य
तिविस्वमेव काव्यस्य स्यात् सित्तोऽत्र
पवस्व न पण्यमत्र पत्नी स्यात् प्रतुस्व
सोऽत्र विस्वतश्च पवस्व न तुतिः क
स्वप्नं वापि सित्तस्य सित्तं तु तयोऽस्वप्नस्य प्रथमं तव स्यात् सोऽत्र पण्यं विस्वमेव वि तव
तो पवस्व सोऽत्र पण्यमत्र स्यात् सोऽत्र प्रथमं तव मे स्वप्नस्य सित्तं वः पण्यं सोऽत्र सित्तं तव ।

तत्तथावन्तिथेने वेअस्कासासोअअपसोअपासुतइंआपमहउअअथाकोअ
नितिसवेअस्कासासोअअसमृत्ताथातिनेसुनवसिखतोःसप्रआअपमविप्रआआविब
स्यतनस्कासासोअअअहंतित्तास
अववे।स्कासासोअअपवप्रानस्य
नसवस्यवेअस्कासासोअअअनृज
— अवावरांतथातपमस्कासासोअअअनृजसमृउअिनेकोस्यवावेनर्थनवमअसवप्र
ब्रुतस्यपेअजिअम = स्वासासोअअपमाइंकोअमेनामाअपेअअतिमिथ
कअ — पओतिनेस = पिपेसै।स्कासासोअअ

82

[illegible]

[illegible]

७७

मना प मो रु व वा स्वास्मा सो मभ पस्प ते च
जे। स्वास्मा सो मभ त्वं सो मभ इति वं विं स। तस व स्प तन दा कः कास्प पो गो त मा वि वि स्वा मितो क
मना वि व सि हा इती रुत वाः पस्प स प पः
पि म्म सो मः पव मा नो मा ज व। त्वं सो मा सि
म पि म्म स्वास्मा सो मभ त्वं सु तो न मा न
स्वास्मा सो मभ त्वं सु पा ता मभ इति न
सो मभ इति नो मभ त्वं ति नो काना
मभ इति नो काना मभ त्वं ति नो काना
मभ इति नो काना मभ त्वं ति नो काना

पव मा नो मा ज व। त्वं सो मा सि
म पि म्म स्वास्मा सो मभ त्वं सु तो न मा न
स्वास्मा सो मभ त्वं सु पा ता मभ इति न
सो मभ इति नो मभ त्वं ति नो काना
मभ इति नो काना मभ त्वं ति नो काना
मभ इति नो काना मभ त्वं ति नो काना

अङ्गु न वास्ति नः पवित्रं सा रा वमङ्गुङ्ग जा मेति रा रा ता स्वा रा सो षम क क रुः सो मे न र स रु
निद्रापु वमङ्गु पुः प व त मा प वा स्वा रा सो षम क क रुः सो मे न र स रु
अतिगो सो षम क क रुः प व त मा प वा स्वा रा सो षम क क रुः सो मे न र स रु
निद्रापु वमङ्गु पुः प व त मा प वा स्वा रा सो षम क क रुः सो मे न र स रु
ते मङ्गु । अतिगो सो षम क क रुः प व त मा प वा स्वा रा सो षम क क रुः सो मे न र स रु
त मा प वा स्वा रा सो षम क क रुः प व त मा प वा स्वा रा सो षम क क रुः सो मे न र स रु
स्वा रा सो षम क क रुः प व त मा प वा स्वा रा सो षम क क रुः सो मे न र स रु
सो षम क क रुः प व त मा प वा स्वा रा सो षम क क रुः सो मे न र स रु

[illegible]

[illegible]

४६

सी। तस्मै स न स्व ती उ रे सी नी स पि ष्वि यु न कौ। स्वा सा प — प सो षः प व षा ना पे नौ प — प सो षः प
व षा नः स वि ता आ ति ति स्मः स वि ता स वि ता नी वि स्वे ने वा धे ता नौ प व षा बो ने न तः स — प य धा ना
अ त्वं सो षा सि धा न पु षः अ षि सो षा य ने। प व स्व षः स प त्र वि भ स्वा सा स्ये षा सो षा प प।
अ वि ता नो षा आ स्वः पु षा पा षा नि पा षा
अ यं सो षः क प रि नै प्य तं न प व त म्भु य। नि षा त म्भ क ना सु त म्भ स्वा सा स्ये पु त्र प।
तो प्य तं न प व ते सु वि। आ त म्भ स्वा
त म्भ षा स्ये नै व वा त पे वा षा प तो न धा
रिं त म्भ षः का वा पु म्भ स क त स्वा सा प —
तः प वि त्वं सो षा ग वृ षि नि ष्व स्मे त्वं स्वा सा सो षा
म म्भ प प तु नो षा ति सु तः प वि त्वं त ग म्भ ते। न सो षा न म्भ वा यी। स्वा सा स्ये म्भ

पत पवित्तमविष्णो ज्ञे वि तता मी तना ब्रह्म ते न पु न्ना रि न भस्वा र्ना सो म भू य ते प वि त्त म वि ष्णो
 ते न पु न्ना रि न भ ब्रह्म स वैः पु न्ना रि न भस्वा र्ना सो म भू य ते प ता त्पानि व स्य त तः प वि त्तो म
 वे न ना म्पु न्ना रि वि स्य त भ स वि ले पा वि ति स्व ने व स्य वि त्त वि ष्णो म्पु न्ना रि न भ
 ज्ञे न नैः पु न्ना रि न भस्वा र्ना सो म भू य ते प ता त्पानि व स्य त तः प वि त्तो म
 वि ष्णो म्पु न्ना रि न भस्वा र्ना सो म भू य ते प ता त्पानि व स्य त तः प वि त्तो म
 पः पा व म्पु न्ना रि न भस्वा र्ना सो म भू य ते प ता त्पानि व स्य त तः प वि त्तो म
 त रि स्य ना प व म्पु न्ना रि न भस्वा र्ना सो म भू य ते प ता त्पानि व स्य त तः प वि त्तो म
 न स्व त्ता उ दे क्षी न स प म्पु न्ना रि न भस्वा र्ना सो म भू य ते प ता त्पानि व स्य त तः प वि त्तो म
 ज्ञे ष स्य त त म्पु न्ना रि न भस्वा र्ना सो म भू य ते प ता त्पानि व स्य त तः प वि त्तो म

अवितेपा पुनंतु शानैव अनाः पुनंतु वस्तु
आतवेयः पुनान्ति आ विस्वेतो रे वनाः पा
तर्तन सी स व स पु त म न ॥ तस्वितु तं आ
पे अपवत्ता पतिः सतर्तन सी तस्मै स
ले प व अना पे रा ॥ ५ पु तै स न सो त न

४७

आनात्तः शुभरापनैवेद्यतां बुलनानाकतसु व नृपुष्यादि कौआअर्पणवत्ता
 मंतुत वंतुतितो नृस्य प्राच्छिन्नपंजन आदिमकान कआअरो वेतास्त्रिभुवेतां नृस्य
 मन्तेर्षादे सहापममसुपसुका न के दोहना न सीनस्य विमेषु
 नृक नानेगवप्रिसेनमायानंसा साप नृदिसप्रः बांसा ॥ ससुतुन
 स्त्रीसु स्यामन ह्यप्रतिमा कालसा विस्राना पा नृदिस पतलकलसेन केन
 तत्राखने कप विस्मयान पुदसाम त्रपा वमानातिः साने त्रवा मधसा न
 नाना प्रमा तांसा वदं ते साने पितृवृषिर्षस्य कृतिर्पुसिर्षनिर्षमः
 सांतित्रप नृदिसागे सपे विस्मयान नृ

खनपात्रैप्रपुनितं। विष्णुप्रति करी निलयप्रतः सां त्रिप्रपचुष्टे। सेर्षा स वरुणा वः
यमनः प्रीति करं पन। मयुस्मादु करं पश्चात्ततः पश्चात्ततः पश्चात्ततः पश्चात्ततः
श्रीः वरं पचंप्रतश्चात्ततः पश्चात्ततः पश्चात्ततः पश्चात्ततः पश्चात्ततः
वमानमोमस्मात्ततः पश्चात्ततः पश्चात्ततः पश्चात्ततः पश्चात्ततः
मिच्छे। मीलात्ततः पश्चात्ततः पश्चात्ततः पश्चात्ततः पश्चात्ततः
पश्चात्ततः पश्चात्ततः पश्चात्ततः पश्चात्ततः पश्चात्ततः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 या नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 वि लो य भ ये रू सादि ग त नो ना वा ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

रानी रा मी रा म य ते पां पं रा मी रा तु बिका न पां
 त्म र्कु त र्ग य तु धा नि ना म र्ग वि या द र नि ॥

३१ न रवात्त
३२

1. Find $\lim_{x \rightarrow 0} \frac{1}{x}$



